# भर लो झोलियां

भर लो झोलियां भर लो झोलियां
मां भण्डारे बैठी खोल के भर लो झोलियां
सारे जय माता की बोल के भर लो झोलियां
दाती हो गई दयाल है भर लो झोलियां
मां को सबका ख्याल है भर लो झोलियां

मोती सुखों में बांटती
हीरे कंकरों में छांटती
मां औलाद भी देती है
जयदाद भी देती है

सच्चे दरबार आके
शीश चरणों में झुकाके
ओ बिनती भावना से करके
ओ गंगा नाम वाली तर के

यहां जिसने अलख जगाई
उसने हर इक नयमत पाई
मैया उसकी बनी सहाई
मां अन्न धन देने वाली है
मां भक़्तों की रखवाली है

जो जन आ कर इसके दवारे
सच्चे मन से इसे पुकारे
उसके होते वारे न्यारे
कहते हैं अबंर और जमीन

मेरी मां के जैसा कोई नहीं ॥